ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

"द हिंद सफ़र" प्रोफेसर सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन'

Saharmal Sahar
PhD. Scholar, University of Lucknow, Lucknow, UP, India
Mohammad Fida Alakozay
PhD. Scholar, University of Lucknow, Lucknow, UP, India

सारांश

यह **11** दिसंबर **1950** को काबुल से इस्लाम कले के रास्ते से शुरू हुई यात्रा के अनुभव का वर्णन है**,** जो काबुल से तेहरान और फर दिल्ली तक, कभी कार से, कभी हवाई जहाज से, कभी ट्रेन से और कभी नाव से यात्रा करते हुए दिल्ली पहुंचते हैं और कुछ समय वहां रहने के बाद वह बंबई होते हुए समुद्र के रास्ते आगे बढ़ते हैं। **30** मार्च, **1951** को वे ईरान और फर काबुल लौट आते है।

इस यात्रा के दौरान प्रोफेसर सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' भारत के व भन्न शहरों, क्षेत्रों और भौगो लक वशेषताओं के बारे में ववरण देते हैं और भारत की प्राकृतिक सुंदरता, नदियों, पहाड़ों, जंगलों और शहरों के बारे में अपने वचार साझा करते हैं। वह भारत में हिंदू धर्म, इस्लाम, सख धर्म, ईसाई धर्म और अन्य धा र्मक मान्यताओं के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं**,** साथ ही भारत में रहने वाले पश्तूनों की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आ र्थक स्थितियों के बारे में बताया है। उन्होंने भारत के लोगों के धा र्मक जीवन और व भन्न धर्मों के बीच संबंधों का सटीक वर्णन कया है। भारत की सामाजिक संरचना, रीति-रिवाज और संस्कृति इस यात्रा वृतांत का एक महत्वपूर्ण वषय है।

शब्द संक्षेप: यात्रा वृत्तांत**,** कला**,** पर्यटन**,** साहित्य**,** राजनीति**,** पश्तून जरगा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

परिचय

पश्तो साहित्य जगत के महान लेखक, क व, कथाकार, इतिहासकार, राजनीतिज्ञ प्र सद्ध साहित्यकार सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' का जन्म **1919** ई. में गाजी अबाद गांव, मोमंद दरह, नन्गरहार, अफ़ग़ानिस्तान में एक धा र्मक और श क्षत परिवार में हुआ। जब सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' छः वर्ष के आयू में थे तो अपने पता के प्यार से वं चत हो गए और उनके सर से पता जी का साया उठ गया। उनकी माँ ने उनका पालन-पोषण करने के लए बहुत कष्ट उठायीं। उन्हीं का आशीर्वाद था क वे और उनके भाई श क्षत हो गए। उन्होंने अपनी प्रारं भक धा र्मक शक्षा अपने घर और मस्जिद में निजी तौर पर प्राप्त की।

1932 ई. में, सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' ने अपनी प्राथ मक धा र्मक शक्षा पूरी की और नंगरहार जिले के 'नजमुल मदारिस' में शा मल हो गए। उन्होंने इस मदरसे में तीन वर्ष पढ़ाई करने के बाद **1935** ई. में इन्हें 'काबुल दारुल उलूम' में प्रवेश मला और वहाँ अपनी पढ़ाई शुरू की। श्री रिश्तीन ने शक्षा के साथ-साथ मी डया के प्रति भी अपना प्यार और रु च दिखाया और "इस्लाह" नामक अखबार पढ़ना शुरू कया, जो उनकी मान सकता को समझाने और प्रोत्साहित करने में बहुत सकारात्मक प्रतीत होआ।

श्री रिश्तीन साहब को **1938** ई. में काबुल दारुल उलूम से एक बहुत अच्छा प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद उसी वर्ष के पहले महीने के पहले दिन से "अदबी चमन" और पश्तो टोलनै (पश्तो समुदाय) के सदस्य के रूप में स्वीकार कया गया था। उन्हें 23 जुलाई 1941 ई. में पश्तो समुदाय नियम वभाग के प्रबंधक के रूप में नियुक्त कया गया था। एक साल बाद, वह पक्तिया प्रांत के "वड़ांगे जरिदे" (रे डकल जर्नल) के संस्थापक और संपादक बन गए। उसी वर्ष अगस्त माह में उन्हें पश्तो समुदाय का उप प्रायोजक, शब्दावली एवं नियम वभाग का प्रबंधक नियुक्त कया गया। (स. म. हाशमी)

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

1943 ई. में, उन्हें पश्तो वश्वकोश (दायरतुल्मारिफ़) के अनुवाद वभाग के प्रमुख के रूप में नियुक्त कया गया था। वह **1947** ई. में फराह प्रांत में "सस्तान" पत्रिका के संस्थापक और प्रकाशक बने। एक साल बाद, उन्हें पश्तो टूलना (पश्तो समाज) के उपाध्यक्ष और पश्तो दारत-अल-मारिफ़ के प्रबंधक के रूप में चुना गया। **1950** ई. के जुलाई महीने में, उपर्युक्त कर्तव्यों के अलावा, वह देश के समाचार पत्र के संचालक बन गए। इसके अलावा, उन्होंने साहित्य संकाय के छात्रों को भी पढ़ाया और वहां शक्षक रहे। **1951** ई. में, उन्हें पश्तो सोसाइटी के मुख्य संपादक के रूप में नियुक्त कया गया और **1952** ई. में, वे ((ज़िरी)) पत्रिका के दूसरे दौर के संस्थापक बने। **1955** ई. के मार्च महीने में, उन्हें पश्तो समुदाय के प्रमुख का आ धकारिक पद दिया गया, और फर **1956** ई. की शुरुआत में, शक्षा मंत्रालय और साहित्य संकाय के पश्तो सलाहकार, जिस पर वे **1957** ई. तक रहे। (श. स. हाशमी, د ادب پوهنې څانګې(साहित्यिक अध्ययन वभाग))

श्री रिश्तीन साहब को **1973** ई. में पेंशन प्राप्त हुई। इसके बाद उन्होंने अपने जीवन के अंत तक दोबारा कोई सरकारी नौकरी नहीं की और न ही कसी सरकारी प्रकाशन में मदद की। इन कर्तव्यों के अलावा, प्रोफेसर रिश्तीन ने कई मी डया और सांस्कृतिक कर्तव्य भी निभाए हैं। वैज्ञानिक और साहित्यिक लेखन और प्रकाशनों की एक श्रृंखला के बाद, प्रो. रिश्तीन को प्रशंसा और पुरस्कारों से सम्मानित कया गया है और उन्हें **15** से अ धक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। प्रोफेसर सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' की मातृभाषा पश्तो थी, ले कन उन्होंने फ़ारसी, उर्दू और अरबी भाषाओं में भी रचनाएँ लखीं और अरबी और उर्दू से कई अनुवाद कए। 'रिश्तीन' को पश्तो साहित्य का पांचवां सतारा ना मत कया गया है। श्री 'रिश्तीन' साहब का लेखन न केवल अफगान लोगों के लए एक महान शैक्ष णक खजाना है, बल्कि महान शैक्ष णक गौरव का एक चमकदार उदाहरण भी है। पेशावर के लेडी री डंग अस्पताल के

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

बोल्टन ब्लॉक के **10**वें कमरे में लंबी बीमारी के बाद 1998 ई. में प्रोफेसर सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' का निधन हो गया। उनकी आत्मा को स्वर्ग में शांति मले। **(**ताज्द**)**

यात्रा साहित्य

पश्तो भाषा के इतिहास में सफरनामा का अपना वशेष महत्व है। अन्य भाषाओं के गद्य साहित्य की तरह, पश्तो भाषा के गद्य और कथा साहित्य ने पश्तो के आधुनिक काल में अपना कलात्मक मूल्य स्था पत कया। हमारे पास पश्तो साहित्य में यात्रा वृतांत के कई प्राचीन उदाहरण नहीं हैं, सबसे प्राचीन ज्ञात यात्रा वृतांत खुशाल खान ख क के "हिन्दू कोह नामा"**,** "फ़राक़ नामा" और "स्वात नामा" **(**जो **16** वीं शती में लखी गई हैं**)** हैं, ले कन इस रचनाओं में से "हिन्दू कोह नामा" गद्य में और अन्य रचनाएँ पद्य में लखी गई हैं। **(**स. म. हाशमी**)**

इसी तरह पश्तो भाषा के साहित्य में प्राचीन दौर के ओर भी यात्रा वृत्तांत लखे गए है**,** चूँ क हम साहित्यिक यात्रा वृतांत का अध्ययन समकालीन कलात्मक गद्य की एक वशेष शैली के रूप में कर रहे हैं, हम इसकी सं क्षप्त ऐतिहा सक प्र क्रया का अध्ययन कर रहे हैं, इस लए यह कहा जा सकता है क 20वीं शताब्दी के दूसरे दशक में पश्तो साहित्य के वर्तमान कलात्मक और साहित्यिक वकास में साहित्यिक यात्रा वृतांत कहा जाता है और इस श्रृंखला में पहला यात्रा वृतांत मया अकबर शाह **(**द आज़ादये प तलाश**)** का है, जिन्होंने **1919** ई. ब्रिटिश सेना के बढ़ते दबाव के कारण पेशावर के इस्ला मया कॉलेज की **11**वीं कक्षा में अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ दी और अफगानिस्तान चले गए और वहां से वे मध्य ए शया गए, उन्होंने वहां व भन्न क्षेत्रों में एक वर्ष बिताया और हेरात, कंधार एवं गजनी के रास्ते से काबुल वापस आए, फर वे पख्तूनख्वा गए और **1922** में उन्हें ब्रिटिश सरकार ने कैद कर लया।

अकबर शाह के इस यात्रा वृतांत में आज़ादी की तलाश के कई रोचक और आश्चर्यजनक संस्मरण बड़े ही मधुर और कलात्मक ढंग से लखे गए हैं। यह यात्रा वृतांत पहली बार **1960** ई. में पेशावर में और दूसरी बार **1986** में काबुल में **546** पृष्ठों में छपा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

और प्रका शत हुआ। अपने स्वरूप एवं वषयवस्तु की दृष्टि से इसे एक संपूर्ण एवं सटीक साहित्यिक यात्रा वृतांत कहा जा सकता है। (शाहीन)

पश्तो भाषा ग्रेटर अफगानिस्तान की भाषा है, डूरंड की वभाजन रेखा दोनों भाइयों अफ़ग़ानिस्तान और पश्तूनिस्तान को अलग करदिया है। अत: कोज़ा पख्तूनख्वा के पश्तून लेखकों का यात्रा वृतांत के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान था। अफगानिस्तान में, पश्तो यात्रा वृतांत लखने की प्र क्रया में, जो लेखक अ धक उल्लेखनीय और प्रशंसा का पात्र है, वह माननीय प्रोफेसर सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' हैं, जिनके ल खत यात्रा वृतांत ने पश्तो साहित्य को मात्रा और गुणवत्ता दोनों दृष्टि से समृद्ध कया है। (ज़ग़म)

प्रोफेसर सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' ने अपने पूरे जीवन में कई वदेशी और घरेलू समाजों और सभाओं में भाग लया है। आप ने दुनिया के कुछ देशों जैसे भूतपूर्व सो वयत संघ, ईरान, मस्र, भारत और पेशावर की यात्रा की है। इस यात्रा के दौरान आपने अनेक यात्रावृत्तांत लखी हैं। जैसे- "द हिंद सफ़र" (भारत का यात्रा), "द हिवाद नान्दारह"(देश का प्रदर्शन), "द नन्गरहार नन्दारह" (नन्गरहार का प्रदर्शन), "द क़तग़न सफ़र" (क़तग़न का यात्रा), "द अल्माता सफ़र" (अल्माता का यात्रा), "द शुरवी सफ़र" (सो वयत का यात्रा), "द मस्र सफ़र" (मस्र का यात्रा), "द ईश्क़ाबाद सफ़र" (ईश्क़ाबाद का यात्रा), "द बदख़्शान नन्दारह" बदख़्शान का प्रदर्शन), "द अलींगार अव अलीशंग नन्दारह" (अलींगार व अलीशंग का प्रदर्शन) और "द ख़ूस्त लदना" (ख़ूस्त का यात्रा) शा मल हैं। इनमें से कुछ यात्रा-वृत्त पुस्तकों के रूप में प्रका शत हुई हैं और अन्य पत्रिकाओं में प्रका शत हुई हैं। (ग़ज़नफ़र) उस्ताद हबीबुल्लाह रफ़ी प्रोफेसर 'रिश्तीन' साहब के बारे में कहते हैं:

" پوهاند صدیق الله رښتین له هغو پېنځو ستورو څخه و چې په ډېر حساس وخت کې یې د پښتو ادب خدمت ته ملا وتړله او دې پېنځو ستورو پښتو ادب ته هر ډول اثار چې ورته ضرورت و رامنځته کړل. د گرامر او ادب په څېړنو کې یې ډېر خدمت کړی او علاوه له دې نه ادبي نثرونه یې ډېر ښکلي لیکلي دي، سفر نامې یې په هنري نثر لیکلي دي او په عین حال کې یې ادبي څېړنې په هنري نثر کړې دي چې دا د ده یوه ځانگړنه وه "

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

"प्रोफेसर सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' उन पाँच सतारों में से एक थे जिन्होंने बहुत ही संवेदनशील समय में पश्तो साहित्य की सेवा के लए खुद को सम र्पत कर दिया और इन पाँच सतारों ने पश्तो साहित्य के लए सभी प्रकार के कार्यों का निर्माण कया जिनकी आवश्यकता थी। उन्होंने व्याकरण और साहित्य के शोध में बहुत काम कया है और इसके अलावा उन्होंने बहुत सुंदर साहित्यिक गद्य भी लखा है, उन्होंने कलात्मक गद्य में यात्रा वृतांत लखे हैं और साथ ही उन्होंने कलात्मक गद्य में साहित्यिक शोध भी कया है, जो उनके वशेषता है" (आबिद)

प्रोफेसर 'रिश्तीन' ने पश्तो साहित्य में यात्रा वृतांत नामक साहित्यिक वधा को साहित्यिक सौंदर्य प्रदान कया और उसे समसामयिकता के आभूषण से सुसज्जित कया है। हम इस लेख में उनकी "द हिंद सफ़र" नामक रचना पर चर्चा करते हैं।

द हिंद सफ़र

प्रोफेसर 'रिश्तीन' को एक प्रमुख इतिहासकार, साहित्यकार और लेखक माना जाता है। उनके यात्रा वृतांत "द हिंद सफ़र" पश्तो साहित्य का गद्यात्मक शैली में लखी होई रचना है। "द हिंद सफ़र" 'रिश्तीन' ने लखा और इसे 1956 में पश्तो टोलना द्वारा 172 पृष्ठों में मुद्रित और प्रका शत कया गया, जिसे बाद में मोमंद ख्परन्दोया टोलना (मोमंद पब्लि शंग सोसायटी) ने **2015** ई. में एक बेहतरीन प्रस्तावना के साथ संक लत और प्रका शत कराया।

ये उस यात्रा की अनुभव का बयान हैं जो **11** दिसंबर **1950** को काबुल से इस्लाम कले के रास्ते पर शुरू हुई थी। काबुल से तेहरान और फर दिल्ली तक पहुंचने के लए वह कभी कार से, कभी हवाई जहाज से, कभी ट्रेन से और कभी नाव से यात्रा करते हैं एवं दिल्ली पहुंचते है और कुछ समय वहाँ रहने के बाद, बम्बई के रास्ते समुद्र में लंबी यात्रा करने के बाद, वह **30** मार्च, **1951** को ईरान और फर काबुल वापस आजाते है। (बाजोड़े)

"द हिन्द सफ़र" नामक यात्रा वृतांत 'रिश्तीन' साहिब का एक कलात्मक रचना है। उन्होंने यात्रा के महत्व को समझाते हुए अपने यात्रा वृत्तांत की शुरुआत की है। सबसे पहले उन्होंने

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

कुरान और शरिया की रोशनी में यात्रा के महत्व को समझाया है। प्रोफेसर 'रिश्तीन' कलात्मक शैली के साथ अपनी यात्रावृत्तांत को आरंभ करते हैं। वर्ष **1950** ई**,11** दिसंबर सोमवार के दिन में प्रोफेसर 'रिश्तीन' पश्तूनिस्तान से तीन सदस्यीय प्रतिनि धमंडल के साथ, भारतीय पश्तून जिरगा के निमंत्रण पर ईरान के रास्ते भारत के तरफ़ रवाना हुए। इस यात्रा में 'रिश्तीन' साहिब के साथ मैवंदवाल साहिब भी साथ दे रहें थे। चूं क उक्त यात्रा एक राजनीतिक यात्रा थी, इस लए अफ़ग़ानिस्तान के प्रतिनि धयों ने पा कस्तान की तुलना में ईरान के मार्ग को बेहतर माना। क्यों क मुद्दा था पश्तूनिस्तान**,** और पा कस्तान के खलाफ़ आवाज़ उठाना एवं पश्तूनों का समर्थन करना**,** साथ ही दिल्ली में पश्तून जिरगा में हिस्सा लेना था। इस लए इसलाम कला के रास्ते को चूना। **(**श. स. हाशमी**)**

इस यात्रा की सबसे अच्छी वशेषताएँ सभी आधुनिक यात्रा उपकरणों का उपयोग है। जैसे: कार, हवाई जहाज, समोद्र के जहाज, रेलगाड़ी आदि**,** साथ ही एक यात्रा में कई देशों को देखना, राजनीतिक अनुभवों के अलावा, लेखक को अपनी भाषा और देश के प्रेस वकास के लए व भन्न मी डया अ धकारियों से मुलाकात करना एवं कला और संस्कृति के क्षेत्र में अमूल्य अनुभव प्राप्त करना हैं। प्रोफेसर सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' ने अपने भारत के इस यात्र**-**वृत्त को कथा शैली में लखा है। इस पुस्तक में **82** शीर्षकों के अंतर्गत यात्रा प्रसंगों एवं स्मृतियों का अत्यंत रोचक, मधुर एवं रंगीन साहित्यिक भाषा में वर्णन कया गया है तथा शब्दों में कतना सुंदर चरित्र चत्रण दिखाई देता है**,** क पाठक पढ़ते समय यही सोचता है क वह सब कुछ अपनी आँखों से देखता है। हर दिन की घटनाओं को कथात्मक रूप में प्रस्तुत कया है और सर्वोत्तम कला का प्रदर्शन पैश कया गया है। लेखते है:- "ईरान, इराक और भारत की इस शानदार यात्रा में मैंने क्या देखा क्या सुना या हम पर क्या कठिनाइयाँ आई हैं**,** वे सभी कहानियाँ और घटनाएँ आप अगले पन्नों में देखेंगे" **('**रिश्तीन**')**

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

"द हिन्द सफ़र" नामक यात्रा वृतांत **20** वीं सदी के भारत का सबसे अच्छा चत्रण है। 'रिश्तीन' ने भारत की राजनीतिक, सामाजिक, शै क्षक, औद्यो गक और साहित्यिक स्थितियों को रोचक ढंग से प्रस्तुत कया है। भारत की यात्रा लेखक के लए कदम दर कदम अद्भुत रही, वहाँ के दृश्य, स्थान और घटनाएँ उसे हर पल आश्चर्यच कत करती रहीं। सुंदर वस्तुएँ और स्थान उन्हें तुरंत आक र्षत करते हैं और वे उनका पूरे दिल से आनंद लेते हैं और इसे उदारतापूर्वक व्यक्त करते हैं।

दिल्ली पहुंचने के बाद वह सबसे पहले राजनीतिक बैठकों में शा मल हुए, ले कन समय-समय पर वह दिल्ली के ऐतिहा सक स्थलों और इमारतों में भी गए और दिल्ली के ऐतिहा सक स्मारकों को करीब से देखा। वह दिल्ली में मुसलमानों की उपलब्धियों और शै क्षक प्रगति से खुश थे।

" غرض دا چې د ډيلي جامعه مليه اسلاميه د هند د مسلمانانو د دماغ محصول او يوه ملي اسلامي موسسه ده"

" क्यों क दिल्ली का जा मया म लया इस्ला मया भारतीय मुसलमानों के दिमाग की उपज और एक राष्ट्रीय इस्ला मक संगठन है" **('रिश्तीन')**

उन्होंने भारत में रहने वाले अफ़ग़ानों और पश्तूनों से मुलाकात करना जारी रखा। इस प्र क्रया में, श्री 'रिश्तीन' ने भारत में रहने वाले पश्तूनों के निमंत्रण पर जमशेदपुर (टाटानगर) की यात्रा की और उन्होंने वहां पश्तूनों से मलने और उनके साथ बैठने के अनुभवों को लखा। इस अद्भुत और अनुभव से भरी यात्रा के दौरान, लेखक ने अपनी खुशी के अलावा अपनी उदासी को भी दर्शाया, क्यों क वह जमशेदपुर (टाटानगर) में मानव-चा लत गा ड़यों के बारे में अपनी धारणा का वर्णन इस तरह करता है:

" مګر کوم شي چې زه په جمشيد پور کي د دې ټول خوشالیو په بدله کي غمجن کړم او زما په زړه يې بد اثر وکړ هغه د بنيادمانو ګاډۍ وي مونږ په جمشيد پور کي په اول ځل ولیدل، چې دوه نفري وړي وړي ګاډۍ د انسانانو په واسطه رابنکل کيږي. "

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

"ले कन जमशेदपुर में इतनी खु शयों के बावजूद एक बात ने मुझे दुखी कर दिया और मेरे दिल पर इसका बुरा असर पड़ा। वे मानव रथ थे, हमने पहली बार जमशेदपुर में देखा क दो व्यक्तियों की छोटी गा ड़याँ मनुष्य द्वारा खींची जाती हैं। " **('रिश्तीन')**

श्री 'रिश्तीन' इस यात्रा पर कलकत्ता स्थित पश्तूनों के साथ राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बैठकों के बाद दिल्ली लौटते हैं और अपने दोस्तों के साथ पश्तून जिरगा के बाकी हिस्सों का दौरा और निरीक्षण करना जारी रखते हैं। संक्षेप में, श्री रश्तिन ने भारत में रहने वाले पश्तूनों की राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों का चत्रण कया है। भारतीय पर्यटन स्थलों की वशेषताएँ, लोगों के आतिथ्य सत्कार, त्यौहार तथा राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक उपलब्धियों का वर्णन कया है।

उपसंहार

"द हिन्द सफ़र" प्रोफेसर सद्दीकुल्लाह 'रिश्तीन' द्वारा ल खत एक बहुत ही मूल्यवान सांस्कृतिक और ऐतिहा सक यात्रा वृत्तांत है। यह यात्रा वृत्तांत एक मार्गद र्शका के रूप में भारत के सामाजिक, आ र्थक, धा र्मक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करती है। यह यात्रा वृत्तांत न केवल भारत के बारे में प्रोफेसर 'रिश्तीन' की प्रत्यक्ष टिप्प णयों और अनुभव को प्रस्तुत करती है, बल्कि उनके लेखन को भारत के इतिहास, भूगोल, संस्कृति और धा र्मक व वधता पर एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। यह पुस्तक उन लोगों के लए एक मूल्यवान संसाधन है जो उस योग के भारत की गहरी समझ हा सल करना चाहते हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

References

'रिश्तीन', प्रोफेसर सद्दीकुल्लाह. *द हिंद सफ़र*. जलालाबाद: मोमंद पब्लि शंग सोसायटी, 2015.

आबिद, बाज़ मुहम्मद. *Mashaal radio माशाल राड्यो*. 02 जनवरी 2012. <https://www.mashaalradio.com/a/24439965.html>.

ग़ज़नफ़र, असदुल्लाह. *د نثر لیکلو هنر (गद्य लेखन की कला)*. मोमंद पब्लि शंग सोसायटी: जलालाबाद , 2013.

ज़ग़म, प्रोफेसर अहमद शाह. *معاصره لیکوالي (समसामयिक लेखन)*. काबूल: दा अफ़ग़ानिस्तान मल्ली तहरीक, सांस्कृतिक वभाग , 2015.

तान्द. *د پوهاند رښتین د تلین په پلمه د هغه ژوند او اثارو ته کتنه*. 26 नवम्बर 2023. <https://taand.net/>.

बाजोड़े, सहेयक प्रोफेसर बर्याले. *د ادبیاتو په لړ کې (साहित्य की शृंखला में)*. काबूल : जहाँ दानेश पब्लि शंग सोसायटी, 2016.

मुर्तजा खान शाहीन. *ادبي لارې او منزلونه (साहित्यिक राहें और मंजिलें)*. पेशावर शहर: प्रोफेसर नईम मेहबूब खान, सकंदर खान, **2008.**

शोधकर्ता सैयद मोहिउद्दीन हाशमी. *د ادب پوهنې څانګې (साहित्यिक अध्ययन वभाग)*. काबूल: मेहेन पब्लि शंग सोसायटी, **2014.**

शोधकर्ता सैयद मोहिउद्दीन हाशमी. *د لیکوالی فن (लखने की कला)*. पेशावर: मे र्वस पब्लि शंग सोसायटी, **2014.**

सैयद मोहिउद्दीन हाशमी. *د نثرې ادب ډولونه (गद्य साहित्य के प्रकार)*. काबुल अफ़ग़ानिस्तान: द ऊलूमो अकादमी द इतलातो औ आमा अड़ेको रयासत (हुमायून मातबा), **2015.**